पद १८0

(राग: वसंत - ताल: त्रिवट)

अशी कशी मुरली तुझी असे मनमोहना रे।।ध्रु.।। नहात होत्यें नम्न नहाणीं। लावुनी केसासी फणी। मुरली ऐकुनी ध्वनी। तशीच नम्न धावल्यें। त्या वृंदावना रे।।१।। भरुनि ठेविलें शिरीं कुंभ पाणी। जात्यें गृहा चक्रपाणी। कुंभ विसरला म्हणूनी। पुन्हां फिरुनी आल्यें। यमुना जीवना रे।।२।। म्हणतसे माणिकदास। लावुनी चरणाचा ध्यास। गोपी भुलल्या मुरलीस। नसे देहभावना रे।।३।।